INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2022; 4(1): 88-91
Received: 16-03-2022
Accepted: 21-04-2022

बबलू कान्त झा
शोध-प्रज्ञ, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत

Corresponding Author:
बबलू कान्त झा
शोध-प्रज्ञ, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत

मिथिला-चित्रकला का अंतराष्ट्रीय क्षितिज

बबलू कान्त झा

सारांश

मिथिला चित्रकला अपने आरंभिक अवस्था से लेकर 20 वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक अपनी चाहर-दिवारी के अंदर ही चौकरी भरती रही। इसे उन्मुक्त होने का सुअवसर प्रदान किया मधुबनी के तात्कालिन एस० डी० ओ० डब्लू जी आर्चर ने। 1934 के महाभूकम्प के बाद क्षेत्र का दौरा करने के क्रम में उन्होंने जो छायाचित्र संकलित किया उसके आधार पर मार्ग पत्रिका में आलेख प्रकाशित किया जिससे विश्वकला प्रेमी मिथिला चित्रकला से अवगत हुए यहीं से मिथिला चित्रकला का सुहाना अंतराष्ट्रीय सफर शुरू हुआ। जो अद्यतन जारी है।

कूट शब्द: मिथिला-चित्रकला, आरंभिक अवस्था, मधुबनी के तात्कालिन, सुहाना अंतराष्ट्रीय सफर

भूमिका

मैथिल लोक संस्कृति की बहुमूल्य निधि 'मिथिला चित्रकला' यू तो हजारों वर्षों पुरानी अपनी ऐतिहासिक पहचान रखती हैं। किन्तु बाहरी दुनिया बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक इससे अनभिज्ञ थी। इनकी धार्मिक, सांस्कृतिक गूढ़ रहस्यों से पर्दा उठता हैं। 1934 ई० के भयंकर भूकम्प के बाद से। जब बाहरी दुनिया इसके दार्शनिक पक्ष को जानकर रोमांचित हो उठी।

मिथिला लोकचित्र का अन्तर्राष्ट्रीय सफर शुरू होता है, 1934 के प्रलयंकारी भूकम्प से; जब मधुबनी के तात्कालीन एस.डी.ओ. W.G.Archer भूकम्प से हुई क्षति का जायजा लेने सर्वेक्षण के क्रम में जहाँ गाँवों में पहुँचे जहाँ उन्हें धराशायी मिट्टी के घरों की दीवारों पर चित्रों के दर्शन हुए। आर्चर ने इन चित्रों के अड़तालीस फोटो लिए जो आज इंगलैंड के ब्रिटिश पुस्तकालय के इंडिया हाउस लंदन में सुरक्षित है। यहाँ 1888 ई. के कुछ और भी चित्र संरक्षित है। मि. आर्चर की मृत्यु के पश्चात् उनकी पत्नी मिल्ट्रेड आर्चर भी इस चित्रकला से काफी प्रभावित थी। मिथिला चित्रकला का गहनता से अध्ययन शुरू होता है वर्ष 1937-38 से जब W.G.Archer पूर्णियाँ जिला के कलेक्टर के रूप में पदस्थापित हुए चूँकि पूर्णियाँ मिथिला का ही एक हिस्सा है जहाँ ब्राह्मण और कायस्थों की आबादी काफी थी। आर्चर ने इन्हीं जगहों के कुछ आकर्षक मिथिला चित्रों के नमूने प्राप्त किया तथा उसे फोटोग्राफ के रूप में संकल्पित भी किया। पूर्णियाँ के जिस गाँव से आर्चर ने मुख्य रूप से चित्रों का संकलन किया वह पूर्णियाँ जिला का भदेश्वर गाँव।

आर्चर को पुनः इस विषय पर अध्ययन करने का मौका मिला वर्ष 1940 में, जब अस्थायी रूप से जनगणना अधीक्षक के रूप में उन्होंने दरभंगा एवं पूर्णियाँ के गाँवों का दौरा किया। यह मौका था जब आर्चर मिथिला चित्रकला क्षेत्र विस्तार संबंधित स्थानीय लोग जो इस कला से जुड़े थे उसके बारे में जानकारी प्राप्त कर पाया। स्थानीय मिट्टी के दीवारों से कुछ फोटोग्राफ भी लिया। स्थानीय मैथिल ब्राह्मणों एवं कायस्थों ने कोहबर घर व अन्याय चित्र घर के भीतर बने थे कि तस्वीर व जानकारी इकट्ठा करने में उनकी मदद की।

उल्लेखनीय यह है कि राँटी व जितवारपुर जो वर्त्तमान में मिथिला चित्रकला के केन्द्र के रूप में स्वीकार्य है। इसकी पहचान बाद के दिनों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हुआ है। भास्कर कुलकर्णी एवं उसके बाद के देशी-विदेशी कलाप्रेमी प्रेरक व इस व्यापार से जुड़े लोगों के पहुँचने के कारण मधुबनी के इन गाँवों की पहचान स्थापित हुई। W.G.Archer ने इन गाँवों से यथा भच्छी, बलाढ़, रामनगर (मधुबनी) तथा केवटी, समैला, दरमा (दरभंगा) से एकत्रित चित्रों एवं सूचनाओं को मार्ग 1949 के अंक में आलेखित किया था। यह आलेख इस चित्रकला का परिचय 'मैथिल पेंटिंग' के नाम से कराता है। विश्वस्तरीय पहचान 20 वर्षों के बाद मिल पाता है जब 1967 ई. में अकाल के समय राहत कार्यक्रम में इस कला को शामिल किया गया। आर्चर ने केवल इस कला का विवरणात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने इसकी ऐतिहासिकता पर कोई खास प्रकाश नहीं डाला लेकिन विश्व कला प्रेमियों को अपनी कला शैली की ओर आकर्षित किया। इन्होंने जाति आधारित शैलीगत भिन्नता को केन्द्र में रखकर इन्होंने इस चित्रकला का अध्ययन किया। तात्कालीन प्रतिष्ठित पत्रिका मार्ग

के 1949 के अंक में एक आलेख प्रकाशित हुआ जिसके माध्यम से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कला-प्रेमी का ध्यान मिथिला लोकचित्र की ओर आकर्षित हुआ।

पहली बार व्यापक रूप से सन् 1948 में भारत की शिल्प और लोकचित्र कला का प्रदर्शन लंदन की आर्ट गैलरी में हुआ। जहाँ ब्रिटेन और दुनिया के विभिन्न देशों के कला प्रेक्षकों एवं कला मर्मज्ञों ने इसे आश्चर्यचकित व विस्फारित नेत्रों से देखा। अच्छी कीमत पर इसे खरीदने की इच्छा भी व्यक्त की। यहीं से शुरू होती है इस लोकचित्रकला के सफलता की सीढ़ी।

इस चित्रकला का दूसरा सोपान शुरू होता है 1957 ई. में जब थॉम्पसन कम्पनी, कोलकाता में लोक कलाओं पर आधारित एक कैलेंडर अपने ग्राहक के लिए तैयार करने की योजना पर काम शुरू किया। कम्पनी द्वारा पटना संग्रहालय के संग्रहालयाध्यक्ष मि. एस. ए. शेरे से सम्पर्क किया गया, जिसने मधुबनी रॉटी ड्योढ़ी के बाबू चन्द्रधारी सिंह से सम्पर्क करने का सुझाव दिया। कम्पनी के कुशल छायाकार एवं कलाप्रेमी भाष्कर कुलकर्णी को मधुबनी भेजकर उक्त कार्य को पूरा करने की जिम्मेदारी सौंपा इस तरह कुलकर्णी मधुबनी के गाँवों में घूम-घूमककर चित्र संकलन में जुट गये। इनका आरंभिक सम्पर्क मिशन उतना आसान नहीं था। किन्तु कुछ करने का जज्बा ही उन्हें इस कार्य में सफलता दिलायी।

मिथिला चित्रकला का अपने क्षेत्र से बाहर कदम रखते ही स्थानीय कलाप्रेमी का ध्यान इधर आकृष्ट हुआ तथा बिहार के प्रसिद्ध कलाकार उपेन्द्र महारथी मधुबनी आये चित्र बनाने वाली महिलाओं को कागज तथा कपड़े पर चित्र बनाकर अपनी आर्थिक उन्नति का रास्ता ढूँढ़ने को प्रेरित किया।

अगला चरण 1966ई. का भीषण अकाल था। मिथिला क्षेत्र में लोगों के सामने जीवन-यापन करने जैसी जटिल समस्या ने घेर रखा था। तात्कालीन विदेश एवं व्यापार मंत्री ललित नारायण मिश्र के पहल पर 1967 में भारतीय हस्तकला बोर्ड के अध्यक्ष पुपुल जयकर बम्बई के कलाप्रेमी व छायाकार भास्कर कुलकर्णी को यहाँ के दीवारों पर बने चित्रों को कागज पर बनाने के लिए उत्साहित करने के उद्देश्य से मधुबनी भेजा। उद्देश्य यह था कि कागज पर बने चित्रों को बेचकर पारिवारिक आय का नया स्रोत बनाया जा सके। इस तरह श्री कुलकर्णी जगदम्बा देवी, सीता देवी, गंगा देवी सरीखें कलाकारों से पेंटिग बनवाकर ले जाते तथा जब वापस लौटते तो उसका बिक्री से प्राप्त राशि इन कलाकारों के बीच बाँटा करते थे।

वैश्विक स्तर पर इस चित्रकला की पहुँच होते ही मानों एक धाक सी जम गयी। भारत सरकार द्वारा 1970ई. में मिथिला चित्रकला को लोकचित्र की मान्यता प्रदान की गयी तथा पहली बार जीतवारपुर (मधुबनी) की जगदम्बा देवी को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया। इसी वर्ष जापान में आयोजित प्रदर्शनी Expo.70 में इन चित्रों को सम्मिलित किया गया। इस प्रदर्शनी के बाद जापान की राजधानी टोक्यो में हासीगावा द्वारा 'मिथिला म्यूजियम' की स्थापना की कयी। आज भी इस चित्रकला का (भारत) समेत यह अकेला संग्रहालय है।

अब तक विदेशी बौद्धिकों को यह चित्रकला आकर्षित करने लगी थी इसके अध्ययन के लिए फ्रांस से इब्स विको, जार्ज ल्यूनियन, सोसिल हॉलेट, ब्रनो केची, जर्मनी से एरिका स्मिथ, इंगलैंड से कैरोलीन, हेनिंग ब्राउन, इटली की मैरी चार्लोट बाउन्टन, एथनिक आर्टस फाउण्डेशन अमेरिका से रेमण्ड ली बोएन्स, डेविड सैन्टन ने मधुबनी की यात्रा की एवं मिथिला चित्रकला पर अपना आलेख व पुस्तक लिखा जो इस कला के चहेतों को जानकारी प्राप्त करने का एक स्रोत साबित हुआ। इंगलैंड के ट्रेसी ब्लॉक (2002-03) फ्रांस के हेलेन फ्लीउरी, अमेरिका के सुशन स्नोवाडले, एन्थ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, कलकत्ता के नव कुमार दोआरी, प्रो. तुलाकृष्ण झा एवं मधुबनी के डॉ० नरेन्द्र नारायण सिंह 'निराला' पटना विश्वविद्यालय की शोध-छात्रा नील रेखा आदि जैसे व्यक्तित्वों ने मिथिला चित्रकला के विभिन्न पहलुओं पर शोधपत्र एवं पुस्तक लिखा है।

जापान के कला प्रेमी एवं संरक्षक हासीगावा ने तोकामाची, निगिता शहर जापान में 'मिथिला म्युजियम' की स्थापना की तथा मधुबनी से कलाकारों को आमंत्रित कर अपने संग्रहालय हेतु पेंटिंग तैयार करवाया।

भारत से बाहर हाल के वर्षो में यूरोप, अफ्रीका एवं अमेरिका जैसे महादेशों में मिथिला चित्रकला ने अपना विस्तार पाया तथा मॉरीशस मेडागास्कर सिचलस, रियूनियन द्वीप, वाशिंगटन, ट्रिनिडाड, कोलंबिया, गुआयना, पनामा सल्वाडोर, मेक्सिको, ब्राजिल, पेरू, शिकागो, कनाडा, ब्रिटिश कोलंबिया, लीयोपीडीआर थाईलैण्ड, म्यांमार, जर्मनी, इंगलैंड, डेनमार्क, फ्राँस आदि देशों में प्रदर्शन आयोजित की गयी।

विदेश की यात्रा पर जाने वाले प्रमुख कलाकार है- श्रीमती सीता देवी, बौआ देवी, अनमोला देवी, यमुना देवी, रामसुन्दरी देवी, सत्य नारायण लाल कर्ण, रेणु देवी, शिबन पासवान, शान्ति देवी, महासुन्दरी देवी, गोदावरी दत्त, कर्पूरी देवी, शायदा कुमारी, गंगा देवी, लीला देवी आदि।

नेशनल एवं स्टेट अवार्ड से सम्मानित कलाकारों की विदेश यात्रा जो चर्चित रहा है पद्म श्री सीता देवी शिल्प गुरु अमेरिका एवं जापान गयी, राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित गंगा देवी अमेरिका, फ्राँस एवं जापान गई। राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजी गयी गोदावरी दत्त शिल्प गुरू जर्मनी (1985) एवं जापान (1989-98) गयी। राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित शिल्प गुरु महासुन्दरी देवी, जापन और मॉरीशस गयी। सुभद्रा देवी पेपरमेशी कला के संदर्भ में अमेरिका एवं स्पेन गयी। इसी तरह कर्पूरी देवी (फ्राँस एवं जापान), विमला दत्त शशिकला देवी, बौआ देवी, शांति देवी, शिबन पासवान, यमुना देवी, शारदा देवी, मिनी कुमारी, रामसुन्दरी देवी एवं अन्य कलाकार जापान की यात्रा पर गयी। पुरुष कलाकारों में संतोष कुमार दास 2005 में अमेरिका गये एवं वहाँ के चार विश्वविद्यालयों में व्याख्यान प्रस्तुत किया। मिथिला आर्ट इंस्टीच्यूट मधुबनी की छात्रा का शान फ्रांसिसको (अमेरिका) के फ्रेनॉटिस गैलरी में 15 पेंटिंग की प्रदर्शनी 15 जून से 19 जुलाई के बीच वर्ष 2009 लगायी गयी थी।

अब तक मिथिला चित्रकला की सैकड़ों प्रदर्शनियाँ आयोजित की जा चुकी है। एथनिक आर्ट फाउण्डेशन अमेरिका के डॉ० डेविड सैन्टन एवं डॉ० परमेश्वर झा ने 2007 में भारत में दिल्ली एवं 2008 में मुम्बई, जनवरी 2013 में दिल्ली एवं डॉ. नील रेखा ने इंगलैंड के लीड्स विश्वविद्यालय में प्रदर्शनियों का आयोजन किया। 30 नवम्बर, 01 दिसम्बर 2003 को आर.के. कॉलेज, मधुबनी में मिथिला चित्रकला पर आयोजित परिसंवाद में अमेरिका के ठाड फार्वडा एवं दक्षिण कोरिया के डेंगू उन्मूलन प्रतिनिधि के रूप में आ चुके है। डेविड सेन्टन इस चित्रकला के अध्ययन एवं प्रसार के लिए हाल के वर्षो में लगातार मधुबनी आते रहे है।

प्रथम बार जापान के इन्टरनेशनल बुद्धिस्ट ब्रदरहुड एसोसिएशन (IBBA) ने इस चित्रकला के प्रथम पीढ़ी के कलाकारों का रंगीन चित्र 2009 के कैलेण्डर के लिए प्रकाशित किया।

2008 ई. में मिथिला आर्ट इंस्टीच्यूट के आयोजकत्व में आयोजित कार्यशाला में अमेरिकी चित्रकार श्रीमती पैटर हेलस्ट्रोम एवं विद्वान पॉल एरॉनसन भाग ले चुके है।

वर्ष 2009 में जर्मन मूल की फ्राँसीसी छायाकार एवं शोधकर्त्ता डाईडी वॉन शियॉन (Deidivon Schaewen) और फ्राँसीसी मूल की इंडोनेशियाई पत्रकार एलिजाबेथ का भी मधुबनी आगमन हुआ है।

वर्ष 2010 में अमेरिका से डेविड सेन्टन, फिल्म निर्माता पीटर जीनिश आड्रेस्टेन (छायाकार) मिशेन मोग्लेन (लेखक) तथा भारतीय मूल की चित्रकार

विधा सौम्या ने भी मधुबनी आकर इस चित्रकला से जुड़ी आवश्यक जानकारी को संकलित किया।

'ए डे इन मिथिला' 'मुन्नी' एवं 'फाईव पेन्टर्स इन मिथिला' नामक डॉक्यूमेंट्री फिल्म अमेरिकी नेतृत्वशास्त्री रेमण्ड बोएन्स द्वारा बनायी गयी है। पश्चिमी जर्मनी की प्रख्यात महिला 'एरिका मोआइजर' ने महासुंदरी देवी से विभिन्न पर्व त्योहारों पर बननेवाले लगभग 85 अरिपन का संकलन तैयार किया।

इत्स विको नामक फ्रांसीसी लेखक व प्रोफेसर द्वारा महासुन्दरी देवी की चुनिंदा चित्रकारी प्राप्त कर सम्पूर्ण यूरोप, फ्राँस, बेल्जिम स्वीटजरलैण्ड, स्पेन इत्यादि देशों में प्रदर्शनी लगायी गयी।[30]

उन्होंने 'दी आर्ट ऑफ मिथिला' नामक पुस्तक का लेखन भी किया, जिसमें महासुन्दरी देवी द्वारा बनायी गयी 10 चित्रों को शामिल किया।

कनाडा के फिल्म प्रोड्युसर मि. एलान वैस जो महासुन्दरी देवी के चित्रों को अपनेवृत चित्र में चित्रकार की सहमति से शामिल किया। एशियन आर्ट म्युजियम सन फ्रांसिस्को कनाडा के संस्था 1999.39.37 जिसका नामकरण म्युजियम द्वारा एन ऑसपिसीयस डायग्राम' दिया गया है, महासुन्दरी देवी द्वारा चित्रित है। मि. वैस ने अपनी फिल्म 'इंटीगर' योगा ऑफ श्री अरविन्दो एण्ड दी दर में महासुन्दरी देवी की चित्रकला को शामिल करना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने अनुमति भी माँगा था।

आज महासुन्दरी देवी की चित्रकारी भारत के राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली, क्राफ्ट म्युजियम दिल्ली सहित मिथिला म्युजियम जापन, एशियन आर्ट म्युजियम संन फ्रांसिस्को, कनाड़ा, अमेरिका के संग्रहालय, वेस्ट जर्मनी, फ्राँस, आस्ट्रेलिया एवं अन्य कई देशों के म्युजियम में धरोहर के रूप में संरक्षित है।

मिथिला म्युजियम जापान के उद्घाटन समारोह के अवसर पर वर्ष 1988ई0 में मुख्य अतिथि के रूप में आयोजक द्वारा आमंत्रण पर इन्होंने जापान की यात्रा की। 1989, 1990 एवं 1996 ई. में जापान के विभिन्न शहरों में आयोजित प्रदर्शनी में भी इन्होंने हिस्सा लिया। 1992ई. में इन्होंने मॉरीशस की यात्रा की जहाँ मॉरीशस के राष्ट्रपति श्री अनिरूद्ध जगन्नाथ की पत्नी से मुलाकात हुई जो महासुन्दरी देवी के चित्रों को देखकर काफी प्रभावित हुई । इन्होंने मॉरीशस से टी-यूनियन (फ्राँस) की भी यात्रा की तथा अपने जीवंत कला का प्रदर्शन किया।

1997ई. में दिल्ली के प्रगति मैदान में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला का आयोजन हुआ था जिसमें इंगलैंड के प्रधानमंत्री मिसेज थेचर का पर्दापण हुआ जो महासुन्दरी देवी के चित्रों को देखकर काफी अभिभूत हुई थी।

जापान के हत्सीगावा ने मिथिला चित्रकला पर आधारित एक पुस्तक का प्रकाशन किया। अमेरिका के नेतृत्वशास्त्री, अध्यक्ष एथनिक आर्ट फाउण्डेशन और पूर्व कार्यपालक निदेशक, अन्तर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय अध्ययन युनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया वर्कले 2000ई0 -2014 ई0 तक लगभग प्रत्येक वर्ष मधुबनी आते रहे है उन्होंने 'मिथिला पेंटिंग: दि इवोल्युशन ऑफ एन आर्ट फॉर्म नामक पुस्तक का 2007 में प्रकाशन करवाया। मिथिला आर्ट इन्सटीच्यूटी के अध्यक्ष भारतीय मूल के डॉ. परमेश्वर झा एवं प्रोफेसर ऑफ एनिरेट्स ऑफ इकॉनोमिक्स, रटर्गल विश्वविद्यालय अमेरिका ने इस पेंटिंग पर आधारित पुस्तक का प्रकाशन किया।

W.G. Archer इंगलैंड ने अस्सी वर्ष पहले एवं इब्स विको ने 40 वर्ष पहले इस तथ्य को स्वीकार कर लिया था कि मिथिला चित्रकला वास्तव में आधुनिक कला है और चित्रकला के समकक्ष एक स्कूल है यह यूरोपीय सचित्र परम्पराओं के औपनिवेशिक परिचय एवं फैशन के लिए एक सम्मोहक विकल्प प्रदान करता है।

डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन 'शास्त्रार्थ' शोध पत्रिका में 'मिथिला' लोकचित्रकला के आयाम' शीर्षक वाले आलेख में लिखते है कि कोलम्बिया विश्वविद्यालय की प्रो. रूथ रोत्ज के साथ मधुबनी, दरभंगा के अनेक ग्रामो के सर्वेक्षणात्मक भ्रमण में मैंने इस लोकचित्र कला को 1958 ई. में ही भित्तियों पर देखा था जिसका विवरण 'वैदेही' दरभंगा के जून 1958 अंक में 'मिथिलाक लोककला पद्धति शीर्षक के रूप में देखा जा सकता है। मिथिला लोकचित्र को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने वाले स्थानीय विदेशी व्यक्तित्व जिन्हें इतिहास याद रखेगा, में प्रमुख है- प्रो. रूत्थ रीब्ज, प्रो. प्रफुल्ल कुमा सिंह मौन, उपेन्द्र महारथी, दयाशंकर उपाध्याय जयशंकर दास, हासीगावा, मणिपद्म, इब्स विको, लक्ष्मीनाथ झा, डॉ० उपेन्द्र ठाकुर, मुल्कराज आनंद, रेमण्ड, भास्कर कुलकर्णी, पुपुल जयकर, एरिक स्मिथ, जीवानंद ठाकुर, भ्रमर, डॉ. नरेन्द्र नारायण सिंह निराला, अवधेश अमन, सत्यार्थी डॉ. परमेश्वर झा आदि।

विश्व के अन्य प्रमुख व्यक्तित्व जिन्होंने मिथिला चित्रकला को न केवल अकादमिक समर्थन प्रस्तुत किया बल्कि खरीदने में भी दिलचस्पी दिखलायी उसमें प्रमुख है अर्लिग डेस्य, पूर्व आवासीय UNDP प्रतिनिधि नई दिल्ली, ईस्टर स्कूल ऑफ द हेग, हॉलैण्ड, इसरो लेरो जेनेवा, हासीगावा, डायरेक्टर ऑफ मिथिला म्युजियम, जापान मुत्सको कोयामा, ऑकीगावा जापान, स्टूअर्ट सटलन, कैम्ब्रिज (इंगलैंड), मोआएरा J.YibZon, युनिवर्सिटी ऑफ वेस्ट सिडनी आस्ट्रेलिया, रीय जेम्पेस लंदन, इन लोगों ने मिथिला चित्रकला' की चर्चित कलाकार शशि कला देवी के चित्रों मे अपना आकर्षण दिखलाया था।

कोरोलियन हेनिंग ब्राउन ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा है कि- ''पूर्व में मिथिला में महिलाओं का स्थान पुरुषों से कम था किन्तु मिथिला पेंटिंग ने उन्हें विश्व विख्यात बना दिया।'' कथन अक्षरशः सत्य प्रतीत होता है।

जेने आर थर्सवे पहली बार 1968 ई. में भारत आयी एवं 1970 में यूनाइटेड स्टेट लौट गयी। अपनी इस पात्रा में थर्सवे ने चित्रों का एक छोटा सा संग्रह किया जो युनिवर्सिटी ऑफ फ्लोरिडा के डिपार्टमेंट ऑफ रिलीजन फेकेल्टी के रूप में शामिल हुआ। कुछ साल बाद पुनः थोड़े समय के लिए इनका भारत आना हुआ और इस बार वह आधुनिक धार्मिक आन्दोलन जैसे विषय पर अपना शोध पूरा करने पहुँची थी।

मिथिला चित्रकला में हरिजन चित्रकला की गोदना शैली पर कुछ पाश्चात्य विद्वानों द्वारा इस शैली से जुड़े दुसाध जाति के ऐतिहासिकता को इस रूप में वर्णित किया गया; एम०जी० हैलेट ने लिखा है- दुसाध उत्तर बिहार की एक पुरानी जाति है इनके पूर्वजों में कई राजा हुए। इनके राजपाट की कहानियाँ प्रचलित है। एच०एच० रिजले के अनुसार बड़ी संख्या में इस जाति के लोग गाँवों में संदेशवाहक और चौकीदार का काम करते हैं। नवाब अलवर्दी खाँ के मातहत एक फौज दुसाधों की थी। बुकानन फ्रांसिस के अनुसार दुसाध जाति का राजा शैलेश वीर पराक्रमी तथा प्रतापी था। जेम्स राड ने दुसाध को गहलोत क्षत्रियों की चैबीस शाखाओं में इक्कीसवी शाखा के रूप में परिगणित किया है जबकि विलियन क्रम ने दुसाध जाति के बारे में लिखा है कि संभवतः यह दुसाध अनार्य मूलक है, जबकि रिजले ने इसे दविड़ मूलक कहा है उन्होंने दुसाधों द्वारा रोहु की पूजा का विस्तृत और रोचक वर्णन भी प्रस्तुत किया है।

प्रसिद्ध जर्मन मानवशास्त्री पौराणिक कथाकार और फिल्म निर्माता ने चानों देवी की गोदना चित्रशैली के विकास में काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाया। कहा जाता है कि कागज पर गोदना आकृति को चित्रित करने का विचार मोजर स्मिथ के दिगाम में तब आया जब उसने चानों देवी के शरीर पर गोदना देखा। गोदना के इस शैली के विकास में पलटी देवी जो चानो देवी की सहयोगी रही और नटिन जाति से थी, इसी ने चानो के शरीर पर गोदना गोदी थी। चानो और पलटी देवी उजला और प्राकृतिक रंगों को मिलाकर दो महीना तक एकांत में आम के बगीचे में बैठकर गोदना पेंटिंग शैली का विकास की।

मोजर स्मिथ द्वारा 1978-79 में नई दिल्ली में गोदना पेंटिंग की प्रदर्शनी लगायी गयी जिसे खूब सराहा गया। स्थानीय स्तर पर कृष्ण कुमार कश्यप व डॉ. उमेश कुमार का गोदना पेंटिंग पर अकादमिक कार्य सराहनीय रहा है। कृष्ण कुमार

कश्यप की आत्मकथा 'वासमती' तथा डॉ उमेश कुमार की पुस्तक भारतीय लोकचित्र कला का सांस्कृतिक परिवेश में इसे देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

अन्ततः यह कहना समीचीन प्रतीत होगा की अंतराष्ट्रीय पहुँच ने ही मिथिला लोकचित्र को रोजगारोन्मुख बनाया। खासकर अमेरिका, फ्रांस, इटली व इंग्लैण्ड जैसे देशों के कला प्रेमियों ने न केवल मधुबनी की यात्रा की अपितु इस क्षेत्र के विभिन्न भागों में घूमकर अलग-अलग समुदायों के लिए अवसर की तलाश की तथा उन तमाम संभवनाओं की ओर ध्यान आकृष्ट कराया जिसके परिणाम स्वरूप आज दर्जनों चित्रकार जो अलग-अलग समुदाय से संबंध रखते है कि अंतराष्ट्रीय पहचान बन चूँका है देश-विदेश में उन्हें सम्मानित होने का अवसर प्राप्त हो रहा है। यह सब इस चित्रकला के अंतराष्ट्रीय सफर के बिना अकल्पनीय सा लगता है।

संदर्भ

1. कश्यप कृष्ण कुमार; मिथिला चित्रकला, सांस्कृतिक कार्य निदेशालय, कला, संस्कृति एवं युवा विभाग बिहार - 2013, पृ.96
2. आजकल, अंग आलेखन, फरवरी 1995, पृ. 28-29
3. पाण्डेय डॉ. शिववंश; राष्ट्रभाषा परिषद पत्रिका, अप्रैल 2017-18 पृ. 66
4. पाठक शोभाकान्त; सांस्कृतिक प्रतीक कोष, पृ. 96
5. पाण्डेय डॉ. शिववंश; परिषद पात्रिका, लोकसंस्कृति में गोदना का महत्तव, पृ. 67
6. यादव डॉ. देवनारायण; शास्त्रार्थ, शोध पात्रिका, मिथिला संस्कृत शोध संस्थान, दरभंगा, 2015-16 पृ. 3
7. Beyoond Disciplines, Anshu Kamal publication, Patna, 184.